RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 16वां जनवरी से मार्च 2024 अंक : 63वां

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

चहकती चेतना

बोलते चित्र

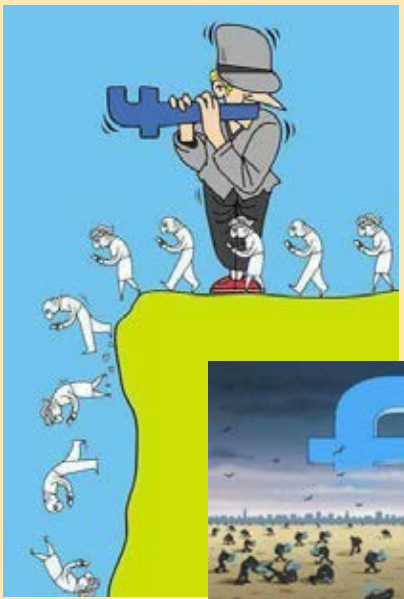

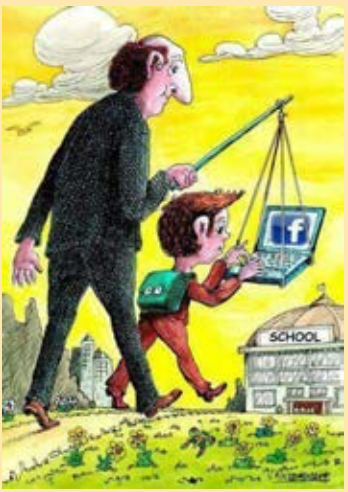

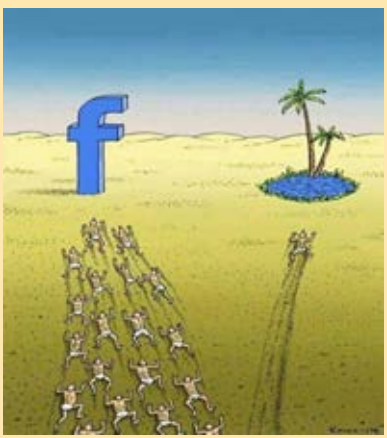

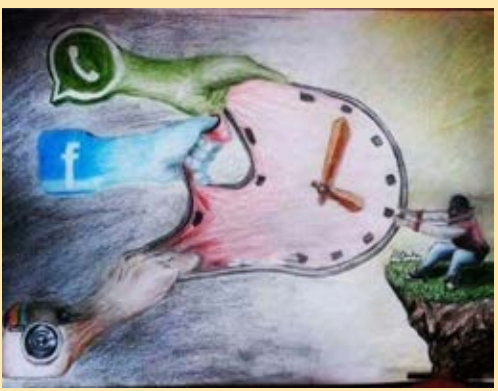

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्ज्वला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन दिल्ली, श्री विवेक जैन बहरीन

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज (उ.प्र.)

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

क.	विषय	पेज
1	सूची	1
2	कविता-भोर, सीख, ज्ञानोदय	2
3	मायाचार का दुष्परिणाम	3
4	अब नहीं नहाउँगा	4
5	प्रेरक प्रसंग - गर्व किस पर/विशाल हृदय	5
6	प्रेरक प्रसंग - अच्छा मौसम/जय जिनेन्द्र...	6
7	संस्कारों का पालन/वीडियो कॉलिग	7
8	अष्ट मंगल द्रव्य	8-9
9	श्रीवत्स का अर्थ/मैगी नूडल्स...	10
10	जियो ने मरने की व्यवस्था.....	11-12
11	आगे की यात्रा	13
12	कलचुरी नरेश और जैनधर्म	14
13	विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ	15
14	कैलेन्डर 2024	16-17
15	सम्मेद शिखर पंचकल्याणक की झलकियां	18
16	भारतीय संस्कृति के विश्वदूत	19-20
17	भारती इतिहास की श्रेष्ठ नारी-मंदोदरी	21-22
18	भाग्य और पुरुषार्थ	22
19	विक्रम साराभाई/जगदीश चंद्र बसु	23
20	मेगा ड्रा	24
21	आपके प्रश्न आगम के उत्तर	25
22	समाचार	26,28
23	मैं नहीं बनूँगी	27-28
24	जैन शासन पर गर्व	29-30
25	नगाड़े ने झुकाया मुस्लिम शासन का सर	31-32

सदस्यता शुल्क -500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

भोर

बेटा उठ जा राजदुलारे
देखो कितनी हो गई भोर।
जल्दी से स्नान तू कर ले, चल चल जिनमंदिर की ओर।
जिनवर प्रक्षाल करेंगे, पंच प्रभु का भजन करेंगे।
अब प्रमाद को जल्दी छोड़, दौड़ लगा मंदिर की ओर।।

सीख

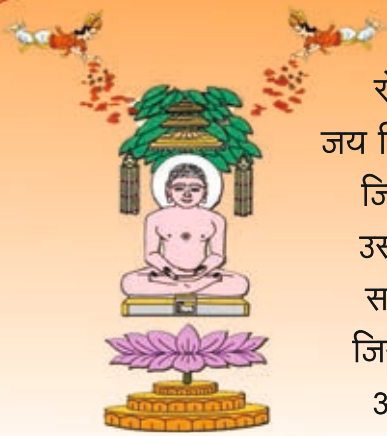

रोज सबेरे उठना सीखो,
जय जिनेन्द्र फिर कहना सीखो।।
जिनदर्शन जो रोज करेगा,
उसका जीवन सुखी रहेगा।
सदाचारमय जीवन जीना,
जिनशासन का अमृत पीना।
अच्छे-अच्छे काम करोगे,
जल्दी से भगवान बनोगे।।

ज्ञानदीप

मंगल ज्ञान का दीप जलाओ,
मिथ्यातम को अभी नशाओ।
अरहंत प्रभु की बात सुनो,
सुख से चेतन सदा रहो।
विपदायें कितनी भी आयें,
सहज शांति से सदा रहो।।

- विराग शास्त्री

कथा सुनो पुराण की -

मायाचार का दुष्परिणाम

दुर्ग पर्वत पर चारण ऋद्धिधारी गुणनिधि नाम के मुनिराज चार दिन के उपवास का नियम लेकर जंगल में आत्मसाधना कर रहे थे। पूरे नगर में मुनिराज की आत्मसाधना की चर्चा हो रही थी। सभी उनके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे। चातुर्मास के बाद मुनिराज आकाश मार्ग से विहार कर गये। उसी पर्वत के पास आलोक नगर में मृदुमति नाम के दूसरे मुनिराज आहार के लिये तो तो लोगों ने समझा कि यही गुणनिधि मुनिराज मुनिराज हैं और उनकी अपूर्व आत्मसाधना के लिये उनकी विशेष पूजा और भक्ति की और विशेष भक्तिपूर्वक उन्हें आहार दिया। मुनि मृदुमति को यह मालूम था कि यह मुझे गुणनिधि मुनि समझकर मेरी इतनी भक्ति कर रहे हैं परन्तु सम्मान पाकर बहुत खुश हुये और उन्होंने यह नहीं कहा कि वे गुणनिधि मुनि नहीं हैं। बाद में भी उन्होंने इस अपराध के लिये अपने गुरू से कोई प्रायश्चित नहीं लिया, उनमें मायाचार का परिणाम आ गया। आयु के अंत में पूर्व में आयु बंधने के कारण मृदुमति स्वर्ग में देव बन गये और स्वर्ग की आयु समाप्त कर वे मायाचारी के परिणाम से शल्लकी वन में हाथी बन गये। इस हाथी को रावण ने पकड़कर अपनी सेना में रख लिया और इसका नाम त्रिलोकमण्डन रखा।

बाद में जब राम ने रावण को पराजित किया तब युद्ध के बाद त्रिलोकमण्डन हाथी को अयोध्या ले आये। एक दिन अचानक पूर्व भव के गुणनिधि के जीव त्रिलोकमण्डन को बहुत क्रोध आ गया और वह पूरे नगर में उत्पात करने लगा, उसने कई पेड़ उखाड़कर फेंक दिये, लोग डरकर जान बचाने के लिये यहाँ-वहाँ भागने लगे। अचानक भरत को सामने देखकर त्रिलोकमण्डन हाथी शांत हो गया। भरत ने उसे सम्बोधित किया उस हाथी को जातिस्मरण हो गया। उसे अपने पूर्व भव का मायाचारी का अपराध याद आ गया। उसे आत्मज्ञान हो गया और उसने हिंसा का त्याग कर दिया। अब वह सूखे पत्ते खाने लगा और अत्यंत शांत भाव से समाधिमरण पूर्वक देह का त्याग किया और स्वर्ग में पुनः देव हुआ।

अब नहीं नहाऊँगा

चिन्मय! घर तो बहुत सुन्दर बनाया है।

थैंक्स अंकल ! बस आपका ही आशीर्वाद है। आप जल्दी से नहा लीजिये। जिनमंदिर पास में ही है। श्रीजी के अभिषेक का समय हो रहा है। हम साथ में चलकर अभिषेक पूजन करेंगे।

वाह! ये तो बहुत अच्छी बात है कि मंदिर पास में है। मैं अभी नहाकर आता हूँ।

और अंकल ठंड बहुत है। बाथरुम के गीजर में पानी गरम हो गया है, आप उससे ही नहाईयेगा।

चिन्मय! क्या तुम गीजर से पानी गरम करते हो..

हाँ अंकल। जब घर बनवाया था तब ही गीजर फिट करवा दिया था।

लेकिन चिन्मय! गीजर से पानी गरम करने पर तो बहुत जीवों की हिंसा होती है।

वो कैसे अंकल ?

अरे बेटा! गीजर में बिना छना पानी सीधे छत की टंकी से आता है और गरम होता है। अनछने पानी में तो असंख्यात जीवों की हिंसा हो जाती है।

अंकल! हम तो गृहस्थ हैं, इतनी हिंसा तो चलती है...

तुम गलत सोच रहे हो चिन्मय। हिंसा चाहे गृहस्थ करे या मुनिराज के निमित्त से हो, हिंसा तो हिंसा ही है और घर के कार्य में जिस हिंसा से बचना असंभव है उस हिंसा को आरंभी हिंसा कहते हैं। पर ये तो संकल्पी हिंसा है, जानते हुये हुये हिंसा कर रहे हो और संकल्पी हिंसा का तो महापाप लगता है।

ठीक है अंकल! मैं सोचूँगा। अभी मंदिर चलते हैं।

तुम बात को टालने का प्रयास कर रहे हो चिन्मय। जब जिनेन्द्र भगवान की बात ही नहीं मानना तो उनके अभिषेक और पूजन का क्या लाभ?

बात टालने की बात नहीं अंकल। गीजर में पानी गरम करने से सुविधा होती है

गर्व किस पर

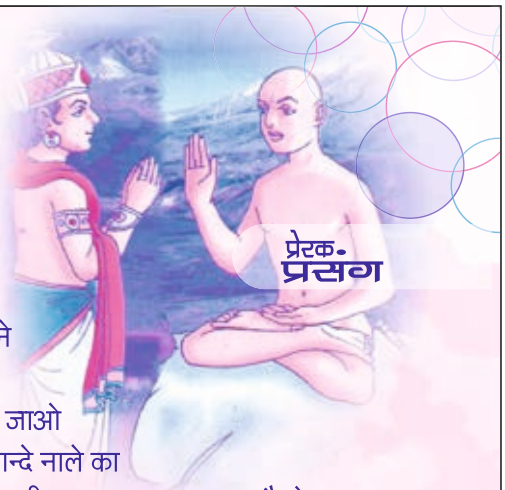

प्रेरक प्रसंग

एक सम्राट मुनिराज के पास उपदेश सुनने पहुँचे। सम्राट ने बड़े गर्व से अपना परिचय दिया।

मुनिराज ने पूछा - तुम रेगिस्तान में भटक जाओ और प्यास से दम घुटने लगे और उस वक्त कोई गन्दे नाले का लोटा भर पानी लाकर तुमसे कहे - इस लोटे भर पानी का मूल्य आधा राज्य है तो तुम क्या करोगे ?

सम्राट ने कहा - मैं तुरन्त वही पानी ले लूँगा।

फिर मुनिराज ने कहा - यदि वह सड़ा पानी पेट में जाकर रोग उत्पन्न कर दे और तुम मरने लगो और उस समय एक वैद्य (डॉक्टर) पहुँचकर तुमसे कहे कि अपना बाकी बचा हुआ आधा राज्य दे दो तो मैं तुम्हें ठीक कर दूँगा। तब तुम क्या करोगे ?

राजा बोला - उसे आधा राज्य देकर अपने प्राणों की रक्षा करुँगा। जीवन ही नहीं तो राज्य किस काम का ?

तब मुनिराज ने कहा - जिस राज्य की कीमत एक लोटा सड़ा पानी और उससे उत्पन्न रोग से ठीक होने के की दवा है - ऐसा राज्य किस काम का और उस पर घमंड क्या करना ?

विशाल हृदय

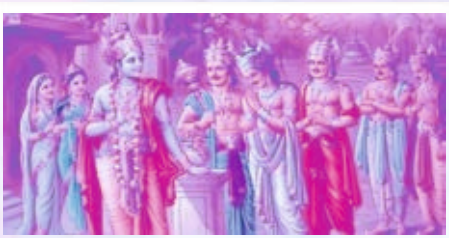

पाण्डवों को वनवास देकर कौरव भाई बहुत खुश थे। वे सब खुशियाँ मनाने एक गन्धर्व विद्याधर के बाग पहुँच गये। गन्धर्व देवों ने सोचा कि इनकी खुशियों के उत्सव से पूरा बाग खराब हो जायेगा। उन्होनें कौरवों से उनके बाग में उत्सव मनाने से मना किया परन्तु कौरव नहीं माने। तब कौरवों को पकड़ने के लिये गन्धर्व आगे बढ़े तो सारे कौरव डरकर भाग गये पर उन्होंने दुर्योधन को पकड़ लिया। जब यह समाचार युधिष्ठिर को मिला तो उन्होंने कहा - हम घर में 100 कौरव और पाण्डव पाँच हैं परन्तु दूसरों के लिये 105 हैं। उन्होंने अर्जुन को भेजकर दुर्योधन को छुड़वा लिया।

संदेश - परिवार के मतभेद सामाजिक जीवन में कमजोरी नहीं बनना चाहिये ।

अच्छा मौसम

सेठ ने अपने चारों पुत्रों की प्रतिभा और सोच जानने के लिये पूछा - बच्चो ! वर्ष के चारों मौसम में से तुम लोगों कौनसा मौसम अच्छा लगता है ? बड़े लड़के ने कहा - जब कोयल गाती है, नये फूल खिलते हैं; ऐसी बसंत ऋतु अच्छी लगती है। दूसरे ने कहा - मुझे तो बरसात का मौसम अच्छा लगता है, चारों ओर हरियाली और ठंडा सुहावना सा मौसम। तीसरे ने कहा - मुझे शीत का मौसम अच्छा लगता है। यह मौसम स्वास्थ्यवर्धक होता है और इस मौसम में बीमारियाँ भी कम होतीं हैं। चौथे छोटे लड़के ने कहा - पिताजी ! मुझे तो सभी मौसम एक समान लगते हैं क्योंकि मौसम से सुख-दुःख का कोई सम्बन्ध नहीं, सुख-दुःख का कारण राग है, कोई बाहर की वस्तु नहीं। हमारे मुनिराज तो भीषण गर्मी में भी पर्वत पर खड़े होकर आनन्द का अनुभव करते हैं।

जय जिनेन्द्र का इतिहास

आज से लगभग 175 वर्ष पूर्व वि.सं. 1884 में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी दिन मंगलवार को अनेक पूजनों के रचनाकार कविवर पं. वृन्दावनदासजी ने काशी से दीवान अमरचन्दजी को जयपुर पत्र लिखा था। इसमें इन्होंने पत्र के प्रारम्भ में दीवान साहब को 'जय जिनेन्द्र' कहकर सम्बोधित किया है। वृन्दावन विलास में लिखा है -

वृन्दावन तुमको कहत है श्रीमत जयति जिनन्द ।
काशीतें सो बांचियो, अमरचन्द सुखकन्द ।।

और इतना ही नहीं, अन्त में पुनः ऋषभदास, घासीराम आदि समाज के अन्य प्रमुख पंच लोगों को भी जय जिनेन्द्र कहकर ही अभिवादन किया है।

वृन्दावन विलास में लिखा है -

ऋषभदास पुनि घासीराम और पंच ने सुगुन निधान।
बिगति बिगति श्री जयति जिनन्द, कहियों सबसों धरि आनन्द ।।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान में जैन समाज में पारस्परिक अभिवादन हेतु 'जय जिनेन्द्र' कहने की जो परम्परा है, वह कोई नई परिपाटी नहीं है, अपितु कम से कम से दो सौ वर्ष प्राचीन है।

- डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली

विशेष - एक जनश्रुति यह भी है कि सर्वप्रथम आचार्य भद्रबाहु ने अभिवादन में 'जयजिनेन्द्र' कहने की प्रेरणा दी थी।

कुछ हो जाये तो फोन करना

अमेरिका में बड़ी कम्पनी में जॉब कर रहे बेटे को जब मालूम पड़ा कि भारत में रह रहे उसके बूढ़े पिता का स्वास्थ्य बहुत खराब है वह तुरन्त ही भारत आ गया और अपने पिता का अच्छे डॉक्टर से इलाज कराया और पिता के स्वस्थ होने पर वापस अमेरिका लौट गया

लगभग 3 माह बाद माँ ने फिर पिता के स्वास्थ्य खराब होने की जानकारी दी और कहा कि इस बार हालत बहुत गम्भीर है। बेटे ने फिर ऑफिस से छुट्टी ली और भारत आ गया । उसने फिर से अच्छे हॉस्पिटल में पिता का इलाज करवा दिया और भाग्य से इस बार भी पिता स्वस्थ हो गये तो वह वापस अमेरिका लौट गया। लगभग 4 माह बाद माँ ने फिर बेटे को फोन किया कि बेटा इस बार तो पिता की स्वास्थ्य ज्यादा गम्भीर लग रहा है। तब बेटा बोला - माँ ! मैं पहले भी दो बार इण्डिया आया। 'कुछ होता' तो है नहीं। पापा हमेशा अच्छे हो जाते हैं। मुझे यहाँ का सारा काम छोड़कर आना पड़ता है बहुत नुकसान होता है। अब जब 'कुछ हो जाये' तो मुझे फोन करना। इतना कहकर उसने फोन काट दिया।

बूढ़ी माँ कम पढ़ी-लिखी होने पर भी 'कुछ होने' का अर्थ समझ चुकी थी।

वीडियो कॉलिंग से माँ का अंतिम संस्कार

वर्तमान समय में पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से भारतीय संस्कारों पर प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया है। जो माता - पिता अपने बच्चों के जीवन के लिये पूरा जीवन अर्पित कर देते हैं वे बच्चे अपनी सुख-सुविधाओं में मग्न होकर संस्कारों को भूल जाते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिला महाराष्ट्र के पालघर में। यहाँ एक 65 वर्षीय निरी बाई पटेल नाम की महिला का देहांत हो गया तो गांव के सरपंच ने अहमदाबाद में रह रही उसकी इकलौती बेटी को समाचार दिया गया। बेटी ने आधुनिक साधनों से पालघर पहुँचने के बजाय सरपंच से पालघर पहुँचने में असमर्थता बताई और गांव के लोगों को अंतिम संस्कार करने के लिये कहा और कहा कि अंतिम संस्कार की सारी प्रक्रिया ऑन लाइन वीडयो कॉल से दिखाई जाये। गांव के लोगों ने उनकी बात मानकर अंतिम संस्कार की सारी विधि लाइव वीडियो से दिखाई। इसके बाद लड़की ने माँ की अस्थियाँ कूरियर से भेजने के लिये कहा। अपनी बेटी को कॉन्वेन्ट स्कूल में पढ़ाकर योग्य बनाने का सपना देखने वाली माँ ने शायद कभी नहीं सोचा होगा कि उसकी बेटी उसके अंतिम संस्कार में भी शामिल नहीं होगी। ये है हमारी आज की शिक्षा पद्धति।

अष्ट मंगल द्रव्य

तीर्थंकर भगवान के समवशरण में जिस स्थान पर भगवान विराजमान होते हैं वहाँ दूसरी पीठ पर नौ निधियाँ, धूप, घट, ध्वजायें और अष्ट मंगल द्रव्य विराजमान होते हैं। अष्ट मंगल द्रव्यों के नाम तिलोयपण्णत्ति ग्रन्थ के अनुसार भृंगार (झारी), कलश, दर्पण, चंवर, बीजना, छत्र, स्वस्तिक और सुप्रतिष्ठ (ठोना) कहे गये हैं। कहीं-कहीं बीजना के स्थान पर स्वस्तिक का कथन मिलता है। ये सभी मंगल द्रव्य प्रत्येक जिनप्रतिमा के पास स्थापित होते हैं। समवशरण में ये 8 मंगल स्वरूप द्रव्य होते हैं। इन्हें अष्ट मंगल द्रव्य कहा जाता है।

महापुराण में झारी, कलश, दर्पण, शंख, घंटा, धूप, घट, दीप, कूर्च, झांझ, मंजीरा आदि 108 उपकरणों को मंगल द्रव्य बताया है।

1. भृंगार (झारी) -जैसे झारी में पानी बहुत भरा हो पर वह थोड़ा-थोड़ा ही बाहर निकलता है उसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान केवलज्ञान अनंत ज्ञान के धनी होते हैं। पर उनकी वाणी में द्वादशांग का वर्णन एक साथ न होकर क्रमशः होता है।

2. कलश - अरहंत भगवान अनंत गुणों से पूरिपूर्ण हो गये हैं इसलिये लोक में भरे हुये कलश को मंगल माना जाता है।

3. दर्पण - जैसे दर्पण में दूर और पास के सभी पदार्थ स्पष्ट झलकते हैं, पर वे पदार्थ दर्पण में प्रवेश नहीं करते और दर्पण भी उन पदार्थों से अप्रभावित रहता है वैसे भगवान के केवलज्ञान रूपी दर्पण में विश्व के सभी पदार्थ स्पष्ट झलकते हैं। ज्ञान में पदार्थ प्रवेश नहीं करते और केवल ज्ञानी का ज्ञान सबको जानकर भी उनसे अप्रभावित रहता है।

4. चंवर - शत्रु समूह पर विजय प्राप्त करने वाले राजा के दोनों ओर चंवर ढुराये जाते हैं। चंवर ऐश्वर्य के प्रतीक हैं। इसी प्रकार अरहंत भगवान ने कर्म रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर तीन लोकों के स्वामी बने हैं, इसलिये उनके वैभव के दर्शाते हुये चंवर ढुराये जाते हैं।

5. बीजना (ध्वाज) -ध्वजा यश, कीर्ति, विजय का प्रतीक होने से मंगल कही जाती है।

6. छत्र - छत्र का अर्थ आश्रय है। जगत में सर्व जीवों को मोक्षमार्ग की शरण देने वाले अरहंत भगवान छत्र के समान हैं। जैसे छत्र से धूप, बरसात आदि का बचाव होता है उसी प्रकार अरहंत भगवान की शरण प्राप्त करने से संसार के दुःखों से बचकर मोक्ष सुख प्राप्त होता है। सिद्धशिला भी छत्र के आकार की है इसलिये छत्र को मंगल कहा गया है।

7. - स्वस्तिक - स्वस्तिक चार गति के नाशक और मोक्ष सुख दर्शाने वाला मंगल चिन्ह है। इसलिये इसे मंगल माना गया है।

8. सुप्रतिष्ठ सु अर्थात् अच्छी तरह से, प्रतिष्ठ अर्थात् लीन होना, विराजमान होना। अरहंत प्रभु अपनी आत्मा में अच्छी तरह से स्थापित हैं, अनंत काल के लिये आत्मा में लीन हो गये हैं। समवशरण में अरहंत प्रभु कमलासन से चार अंगुल ऊपर विराजमान रहते हैं। इसके प्रतीक के रूप में सुप्रतिष्ठ को मंगल द्रव्य माना गया है।

अब नहीं नहाऊँगा का शेष भाग...

और करंट का भी डर नहीं रहता।

मात्र अपनी छोटीसी सुविधा के लिये असंख्यात जीवों की हिंसा करना सही है क्या ? चिन्मय! अब तो बहुत सारे उपाय हैं जिससे पानी भी गरम हो जायेगा और करंट का डर भी नहीं है। पर पानी तो छानकर ही गरम करना चाहिये। हमारा जैनधर्म अहिंसा प्रधान है। हम दिन भर हिंसा से बच नहीं पाते, पर इस गीजर की हिंसा से से तो बच सकते हैं। वरना हम जैन कैसे.....?

अंकल! आपकी बात तो सही है।

चिन्मय! हमारे गृहस्थ जीवन में हम जितना हिंसा से बच सकें उतना प्रयास करना चाहिये। यही सही नीति है।

ठीक है अंकल! मैं आज ही मैकेनिक को बुलाकर गीजर निकलवा देता हूँ। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी और कल से पानी छानकर ही गरम करूँगा।

ये हुई ना बात। बोलो अहिंसामयी जैन धर्म की जय।

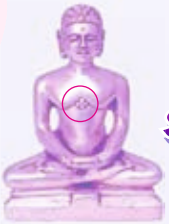

श्रीवत्स का अर्थ

आपने जिनमंदिर में विराजमान जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा देखी होंगी। इन प्रतिमाओं में अधिकांश प्रतिमायें तीर्थंकरों की होतीं हैं । जैसे - भगवान आदिनाथ, शांतिनाथ, महावीर आदि। कुछ प्रतिमायें भगवान की होती हैं। जैसे - भरत, जम्बूस्वामी आदि। तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के हृदय पर फूल के आकार का एक चिन्ह होता है इसे श्रीवत्स कहा जाता है। तीर्थंकर भगवन्तों को जन्म के समय से ही उनके शरीर पर 1008 शुभ चिन्ह होते हैं। उनकी छाती पर श्रीवत्स का चिन्ह होता है। श्री यानि लक्ष्मी और वत्स का अर्थ पुत्र होता है अर्थात् जिन्होंने अनंत दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य शक्ति इन अनंत चतुष्टय रूप अंतरंग लक्ष्मी को और समवशरण आदि बहिरंग लक्ष्मी को उत्पन्न किया है ऐसे वे तीर्थंकर परमात्मा होते हैं।

मैगी नूडल्स ने ली जान

क्या आप मैगी नूडल्स खाते हैं तो सावधान। अभी कुछ दिन पूर्व घटित एक घटना से पूरे देश में हलचल मच गई। राजस्थान के ब्यावर नगर के अत्यंत प्रतिष्ठित जैन परिवार के अदित डोसी की मैगी नूडल्स के कारण मौत हो गई। अदित अपने माता-पिता की इकलौती संतान था और चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट था।

9 नवम्बर 2018 को अदित मैगी खा रहा था। अचानक नूडल्स को वह निगल नहीं पाया और उसकी सांस रुकने लगी। उसने मैगी को बाहर उगलने का प्रयास भी किया परन्तु वह बाहर भी नहीं निकाल पाया। मैगी अदित के नाक और श्वांस नली में फंस गई। उसकी गम्भीर हालत देखकर उसे तत्काल हॉस्पिटल ले जाया गया। डॉक्टरों ने मैगी निकालने का बहुत प्रयास किया परन्तु वे असफल रहे और अंततः अदित की सांस रुकने से मृत्यु हो गई।

सोशल मीडिया में वायरल से खबर की सत्यता जानने के लिये चहकती चेतना टीम ने अदित के परिवार से सम्पर्क किया और इस समाचार को पूर्ण सत्य पाया।

चहकती चेतना परिवार दिवंगत अदित के चिरविराम की मंगल कामना करता है और आपसे निवेदन करता है कि थोड़े से जीभ के स्वाद के लिये महाअभक्ष्य मैगी का सेवन न करें।

मोबाइल को सब कुछ मानने के विरुद्ध अभियान -

जियो ने मरने की व्यवस्था कर दी

अगर आप अपने बच्चे को मोबाइल या टेबलेट दे रहे हैं या उनके सामने लगातार मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं .....तो आपको इससे जुड़े खतरे भी पता होना चाहिये।

बेंगलौर के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेस परिसर के शट क्लीनिक में तीन-चार बच्चे अपने माता-पिता के साथ पहुँचे। उनमें से एक विशाल नाम के बच्चे से डॉक्टर ने पूछा के आपके कितने दोस्त हैं? इस प्रश्न पर विशाल ने वापस डॉक्टर से प्रश्न किया - ऑनलाइन या ऑफलाइन ? फिर विशाल स्वयं ही बोला - ऑनलाइन 500 से ज्यादा और ऑफलाइन 3 या 4। विशाल ने बताया कि वह रोज 8 से 9 घंटे पबजी गेम खेलता है। यह गेम ऑनलाईन ही खेला जाता है। जिसमें विश्व के कई देशों के लगभग 100 लोग एक साथ खेलते हैं। यह समस्या बहुत गम्भीर है। जियो कम्पनी के कारण 2016 से इंटरनेट सस्ता हो जाने से ये समस्या और भी गम्भीर हो गई है।

देश के 991 स्कूलों के मात्र कक्षा आठवीं के बच्चों पर किये गये एक सर्वे में पता चला है कि भारत में 68 प्रतिशत बच्चे कोई न कोई गेम अवश्य खेल रहे हैं। देश में 22 करोड़ से ज्यादा लोग गेम खेलते हैं और ये गेम की लत उन्हें बीमार बना रही है। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि गेम की लत की शिकार बच्चे अपने को बीमार नहीं मानते। शट क्लीनिक पर हर सप्ताह 4-5 गेम की लत के शिकार नये बच्चे इलाज के लिये आ रहे हैं। क्लीनिक की सीनियर डॉक्टर अश्विनीजी कहती हैं कि हमारे पास ऐसे भी केस आ रहे हैं जिनमें बच्चों की फिजिकल एक्टीविटी खत्म हो गई है। बच्चे नहा भी नहीं पा रहे हैं। रात में नहीं सोते और दिन में सोते हैं। स्कूल जाने में उनका मन नहीं होता। ये बीमारी अब छोटे शहरों के बच्चो में भी देखी जा रही है।

हैदराबाद के 12वीं कक्षा के तेजस को गेम की लत लग गई तो पढ़ाई में ध्यान नहीं होने से 10 वीं में उसके नम्बर कम आये। बार-बार समझाने पर भी कोई सुधार नहीं हुआ तो उसे स्कूल से निकाल दिया गया। घर वालों ने गेम खेलने से रोका तो वह तोड़फोड़ करने लगा। उसका वजन भी बढ़ गया।

सौरभ और उसकी पत्नी सुमन दोनों आई टी कम्पनी में काम करते हैं। उन्होंने 4 वर्ष पूर्व अपने 5वीं क्लास के बेटे को मोबाइल दिलाया। सौरभ और सुमन जब ऑफिस लौटते तो उनका अधिकांश समय इंटरनेट पर बीतता था। माँ-बाप से समय न मिलने के कारण उसे गेम की लत पड़ गई। बड़ी मुश्किल से इसकी लत अब कम हुई है, वह अब

बास्केटबॉल खेलने लगा है।

लखनऊ का सौरभ 12वीं क्लास में है। पिता बिजनेसमेन हैं और माँ दूसरे शहर में नौकरी करती हैं। तीन साल पहले अकेलापन मिटाने के लिये सौरभ ने मोबाइल गेम खेलना शुरू किया। उसे एक वर्ष में गेम की लत लग गई इससे घर में झगड़े बढ़ गये। उसका 10वीं का मैथ्स का पेपर छूट गया।

दुबारा परीक्षा दी परन्तु उसका मनोबल टूट गया। अब इसका इलाज रीहेब सेंटर में चल रहा है।

क्या आपको पता है कि दुनिया के सबसे अमीरव्यक्ति और माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी के मालिक बिल गेट्स ने अपने बच्चों को 14 साल तक की उम्र तक मोबाइल नहीं दिया। इसी तरह एप्पल जैसी बड़ी कम्पनी के संस्थापक और दुनिया को आई फोन देने वाले स्टीव जॉब्स ने 2011 में न्यूयार्क टाइम्स को दिये एक इंटरव्यू में बताया था कि उन्होंने कभी अपने बच्चों को आई पेड इस्तेमाल नहीं करने दिया। दुनिया में मोबाइल से लाभ हानि के सम्बन्ध में बहुत रिसर्च चल रही है।

टाइम मेग्जीन के अनुसार जो छोटे बच्चे 1 साल की उम्र में ही मोबाइल देखना शुरू कर देते हैं ये बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में देर से बोलना शुरू करते हैं। एम्स ने एक रिपोर्ट में बताया कि लम्बे समय तक मोबाइल के प्रयोग से ब्रेन हेमरेज का खतरा बढ़ जाता है। दक्षिण कोरिया के वैज्ञानिक ने बताया है कि मोबाइल में गेम खेलने या अधिक देर तक वीडियो देखने से आंखों की पलक बन्द नहीं होती जिससे ड्राई आईस (आंखों की तरलता समाप्त होना) की समस्या पैदा हो रही है। जिससे अनेक तरह की बीमारियाँ पैदा हो रहीं हैं। दुनिया की प्रसिद्ध एडिक्शन थैरेपिस्ट मैंडी सालगिरी ने तो यहाँ तक कहा कि बच्चों को स्मार्ट फोन देना उन्हें एक ग्राम कोकीन (एक तरह का नशा जिसकी लत होने जाने पर उसके बिना मरने की बैचेनी होती है।) देने के बराबर है।

मोबाइल हमारे घरों में दीवार बन रहा है। यह बच्चों को अपने ही घर में बंद कर रहा है। उन्हें समय दीजिये और उनके साथ उनकी खुशी और समस्या में सहभागिता कीजिये वरना यह दीवार आपको बहुत तकलीफ देगी।

- संपादक

आगे की यात्रा

प्रसिद्ध विद्वान गुरू गोपालदास बरैया मुम्बई से मुरैना से जा रहे थे। उनके प्रशंसक उन्हें पहुँचाने के लिये आये थे। पण्डितजी ने अपने एक साथी से कहा - सामान ज्यादा है इसे तुलवा लो। जितना ज्यादा सामान हो उसका किराया देकर बुक करा लो।

वहीं पास में गाड़ी का गार्ड खड़ा था। उसने पण्डितजी की बात सुनी और वह पास आकर पण्डितजी से बोला - सामान तुलवाने की जरूरत नहीं। मैं तो साथ चल ही रहा हूँ।

पण्डितजी ने चकित होकर उसकी ओर देखा और मुस्कराते हुये उससे पूछा - तुम कहाँ तक जाओगे भाई ?

गार्ड बोला - मैं भुसावल तक चल रहा हूँ। आप चिन्ता मत करें।

पण्डितजी ने पूछा - तुम भुसावल तक चल रहे हो भाई! उसके आगे क्या होगा ?

गार्ड ने सहज भाव से उत्तर दिया - कुछ नहीं होगा। मैं दूसरे गार्ड को बोल दूँगा। वह आगे वाले गार्ड को कह देगा।

पण्डितजी ने पूछा - उसके आगे क्या होगा ?

गार्ड ने उत्तर दिया - आगे का प्रश्न ही कहाँ है ? आप तो मुरैना ही जा रहे हैं।

पण्डितजी ने गम्भीर होकर उत्तर दिया - ऐसा नहीं है भाई। मेरी यात्रा तो बहुत आगे समाप्त होगी। इसलिये चिन्ता हो रही है।

गार्ड ने पूछा - क्या आप मुरैना से आगे जा रहे हैं ? मुझे तो यही पता है कि मुरैना तक जा रहे हैं।

पण्डितजी ने कहा - बात तो ठीक है। मैं अभी मुरैना जा रहा हूँ, मगर मेरी यात्रा तो समाप्त होगी मोक्ष में जाकर। क्या तुम्हारा कोई साथी गार्ड वहाँ तक पहुँचा देगा ?

यह सुनकर गार्ड ने क्षमा मांगी।

(सार की बात यह है कि हम मायाचारी से थोड़े से लाभ लेने के लिये अपने परिणाम बिगाड़कर अपना भव न बिगाड़े ।)

बदलता जीवन

चोर ब्रह्मचारी बनकर सेठ के चैत्यालय से प्रतिमायें चुरा लाया। यह तो धार्मिक सेठ था, जिसने चोर के इस पाप को क्षमा कर दिया और लोगों को यह बताया कि मैंने ही ये प्रतिमा इसे दी थी और उपगूहन अंग का पालन किया। भाव बदले और चोर तपस्वी बन गया!

दूसरा जीवन – अकृतपुण्य के रूप में। पिछला जीवन तपस्वी का था तो सेठ के घर जन्म लिया लेकिन प्रतिमा चोरी के पाप के फल में गरीब हो गया और जीवन में एक बार भी मिष्ठान्न खाने को नहीं मिला। बस एक बार बहुत संघर्ष के बाद एक कटोरी खीर खाने को मिली वह भी योग्य पात्र को आहार दान में दे दी। एक मुनिराज की सौम्य मुद्रा से प्रभावित होकर उनके पीछे चल पड़ा और मुनिराज गुफा में गये तो वह बाहर ही खड़ा हो गया। भूखा शेर आया तो निर्भय होकर सामने खडा हो गया और शेर ने उसे खा लिया। तीसरा जीवन कामदेव के रूप में – सुख और दुःख का मिश्रित जीवन। भाईयों के ईर्ष्या परिणाम से दुखी होकर घर छोड़ा । फिर जहाँ–जहाँ जाते, पहले दुख और बाद में अपार धन मिल जाता। जो स्त्री उसका रूप देखती उस पर मोहित हो जाती। जीवन के अंत में मुनिदीक्षा अंगीकार कर मोक्ष प्राप्त किया।

जैन धर्म का इतिहास -

कलचुरी नरेश और जैन धर्म

भारतवर्ष के इतिहास में कलचुरी नरेशों का काल अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सन् 550 से 1740 तक भारत के उत्तर और दक्षिण के किसी न प्रान्त पर शासन किया है। इनके अनेक वंशज शिव को मानने वाले थे परन्तु उन्होंने जैन धर्म का भी बहुत प्रचार-प्रसार किया। ब्र. शीतलप्रसाद जी के अनुसार **कलचुरी** शब्द जैनत्व का परिचायक है। कलचुरी नरेश दिगम्बर मुनि पद धारण करते थे और कर्मों की निर्जरा करने के लिये साधना करते थे। कल का अर्थ है शरीर और चूरि का अर्थ चूर-चूर करना अर्थात् शरीर के प्रति मोह परिणाम को चूर-चूर करना। कलचुरी वंश के प्रथम सम्राट कीर्तिवीर्य ने मुनि पद धारण कर आत्मसाधना की थी।

प्रोफेसर रामस्वामी एयंगार ने वेल्विकुडी के ताम्रपत्र और तमिल ग्रन्थ पेरियपुराणम् से यह सिद्ध किया है कि कलचुरी वंश के राजा जैन धर्म के पक्के अनुयायी थे। इनके तमिल प्रान्त में पहुँचने पर जैन धर्म की वहाँ बहुत उन्नति और प्रचार हुआ था। कलचुरी सम्राट साहु सर्वहार के पुत्र महाभोज ने मध्यप्रदेश के बहोरीबन्द में विशाल शांतिनाथ मंदिर बनवाया, इसके साथ ही त्रिपुरी में भगवान ऋषभनाथ की, हनुमानताल जबलपुर के जैन मंदिर में भगवान ऋषभनाथ की भव्य प्रतिमा, पटना और सोहागपुर में प्राप्त अनेक प्रतिमायें जैन धर्म के प्रभाव को सिद्ध करती हैं। ये सभी प्रतिमायें कलचुरी राजाओं ने स्थापित करवाईं।

सन् 1200 में कलचुरी राजमंत्री रेचम्य ने श्रवणबेलगोला में भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई। बाद में विज्जल राजा के समय में जैन धर्म का प्रभाव कम हो गया। शैव धर्म के प्रचार हेतु चमत्कारों का सहारा लिया गया। उस समय अबलूर जैन धर्म के प्रचार का प्रमुख केन्द्र था। उस समय के राजा रामय्य ने जैनियों को बहुत सताया और अनेक जैन प्रतिमाओं को तोड़ दिया। सोमनाथ मंदिर में जैनियों पर अत्याचार के चित्र उत्कीर्ण हैं।

विज्जल का मंत्री वसव जैन धर्म अनुयायी था। उसने अपने पद का प्रयोग कर जैन धर्म के उत्थान के लिये बहुत धन दिया। तब विज्जल राजा इससे नाराज हो गया तो वसव को राजा के नाराज होने की जानकारी मिली तो वह राज्य से भाग गया तो विज्जल ने वसव के सहयोगी हल्लेइज और मधुवेय्य की आंखें निकलवा लीं। बाद में वसव में जगदेव नाम के व्यक्ति को भेजकर विज्जल राजा की हत्या करवा दी।

गयकर्ण राजा के समय में भगवान शांतिनाथ के स्तम्भ निर्माण का उल्लेख है। इन सब अनेक कारणों से कलचुरी नरेशों का जैन धर्म के प्रचार में बहुत योगदान रहा।

विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

चहकती चेत

बाल युवा त्रैमासिक

जनवरी

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

फरवरी

S	M	T	W	T
				1
4	5	6	7	8
11	12	13	14	15
18	19	20	21	22
25	26	27	28	29

मार्च

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

अप्रैल

S	M	T	W	T
	1	2	3	4
7	8	9	10	11
14	15	16	17	18
21	22	23	24	25
28	29	30		

मई

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

जून

S	M	T	W	T
2	3	4	5	6
9	10	11	12	13
16	17	18	19	20
23	24	25	26	27
30				

सम्मेद शिखर पंचकल्याणक की झलकियाँ

भारतीय संस्कृति के विश्वदूत - श्री वीरचन्द राघवजी गांधी

जैन समाज में समय-समय पर अनेक सन्त, विचारक, विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, कलाकार, वैज्ञानिक, दानवीर, शासक आदि होते रहे हैं जिन्होंने विश्व को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया।

ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व थे - वीरचन्द राघवजी गांधी। 25 अगस्त 1864 में भावनगर के महुवा में जन्मे वीरचन्द बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थे। उनके पिता को पुत्र के जन्म के पूर्व एक स्वप्न आया कि घर के आंगन में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा गड़ी हुई है। स्वप्न सच हुआ और वीरचन्दजी के जन्म के दिन ही भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा आंगन खोदकर निकाली गई। वीरचन्दजी ने कानून की शिक्षा के साथ जैन दर्शन का गहरा अध्ययन किया और 14 भाषायें सीखीं।

सितम्बर 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद का आयोजन हुआ जिसमें दुनिया के अनेक धर्मों के 3000 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की थी। उसी धर्म संसद में स्वामी विवेकानन्द को उनके प्रभावशाली भाषण ने सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध कर दिया था। इसी धर्म संसद में वीरचन्दजी का भी जैन दर्शन और उसकी प्रभावी जीवन शैली विषय पर प्रभावशाली भाषण हुआ था। उस समय के वहाँ के अखबारों में वीरचन्दजी की प्रशंसा और उनके व्याख्यान के अंश भी प्रकाशित हुये थे। इस व्याख्यान से वे इतने प्रसिद्ध हो गये कि उन्हें और व्याख्यान देने के लिये अमेरिका में ही रुकने का निवेदन किया गया। वीरचन्दजी ने अमेरिका में प्राच्य विद्या और जैन विद्या नाम की दो संस्थायें स्थापित कीं। अमेरिका के अलावा उन्होंने यूरोपीय देशों में कुल 535 व्याख्यान दिये। उनके व्याख्यानों से प्रभावित होकर अनेक विदेशियों ने पूर्णतः शाकाहारी जीवन अपना लिया। शिकागो में आज भी वीरचन्दजी प्रतिमा लगी हुई है।

1896 में जब भारत में अकाल पड़ा तो वीरचन्दजी ने अमेरिका से चालीस हजार रुपये और एक जहाज भरकर अनाज भिजवाया। वीरचन्दजी जीव दया के प्रति बहुत जागरुक थे। जब उन्हें पता चला कि सम्मेदशिखरजी में सुअर मारने के लिये कत्लखाना खोला जा रहा है तो उन्होंने अपने कानून के ज्ञान का उपयोग कर कत्लखाने की योजना बन्द करवा दी। जैन तीर्थ पालीताना में पहले जैन तीर्थ यात्रियों से टेक्स लिया जाता था। वीरचन्दजी ने बहुत संघर्ष कर उस टेक्स (Tax) को बन्द करवा दिया।

1890 में जब वीरचन्दजी के पिता का देहांत हुआ तो परिवार के लोग छाती पीटकर रोने लगे। उस समय यही परम्परा थी। वीरचन्दजी ने इस परम्परा को बन्द करवाया और शांति से देह संस्कार करने को कहा।

महात्मा गांधी वीरचन्दजी को अपने भाई जैसा मानते थे। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में वीरचन्दजी का उल्लेख बहुत गौरव के साथ किया है। वीरचन्दजी विवेकानन्दजी के भी परम मित्र थे। जब वे दोनों अमेरिका में थे तो विवेकानन्दजी ने जूनागढ़ के दीवान हरिदासजी को लिखे एक पत्र में लिखा - यहाँ आपके परिचित वीरचन्द गांधी हैं। ये इस भयंकर ठण्ड में भी फल-सब्जी के अतिरिक्त कुछ नहीं खाते। इनका रोम-रोम भारत की आजादी के लिये समर्पित है। अमेरिका की जनता इन्हें बहुत पंसद करती है। गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुये श्री नरेन्द्र मोदी ने एक बार वीरचन्दजी को याद करते हुये कहा था कि वीरचन्दजी बहुत बड़े विद्वान थे परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि 7 अगस्त 1901 में मात्र 37 वर्ष की आयु में वीरचन्दजी का स्वर्गवास हो गया था। भारत सरकार ने श्री वीरचन्दजी के सम्मान में 8 नवम्बर 2009 को पाँच रुपये मूल्य का डाक टिकिट जारी किया था।

देश और जैन समाज के ऐसे महान सपूत को सादर नमन।

कुरीति

इस्लामिक शब्द 'खान' से बना 'खाना'

कई बार हम शब्दों के प्रयोग में उसके पीछे के भाव का नहीं समझ पाते और लोगों की देखा देखी उन्हीं का प्रयोग करने लगते हैं। शब्दों के प्रयोग में एक संस्कृति होती है। हमारे यहाँ भोजन को खाना कहना सामान्य बात है। खाना खा लिया, खाने पर आपका निमंत्रण है, आपने खाना खा लिया क्या आदि वाक्यों का प्रयोग करते हैं। क्या आप जानते हैं कि खाना किस भाषा का शब्द है और इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई ? इस सम्बन्ध में एक दोहा मिलता है -

खाना खाते खल सभी, संत कहें आहार।
सज्जन भोजन को करे, भाषा क्रिया प्रकार।।

अर्थात् खाना दुष्ट लोग खाते हैं, सज्जन भोजन करते हैं और आहार संत / मुनिराज करते हैं।

1. खाना खाया जाता है, भोजन किया जाता है और आहार लिया जाता है।खाना शब्द इस्लाम शब्द खान से बना है।
2. खाना चम्मच या कांटे से खाया जाता है, भोजन एक हाथ से किया जाता है और आहार दोनों हाथों से लिया जाता है।
3. दूसरों पर अत्याचार करके खाना खाया जाता है, जीवन जीने के लिये भोजन किया जाता है और त्याग, तपस्या, संयम और साधना के लिये पेट भरना आहार है।

आज से आप प्रतिज्ञा करें कि अपने घरों में भोजन करेंगे और इसी शब्द का प्रयोग करेंगे।

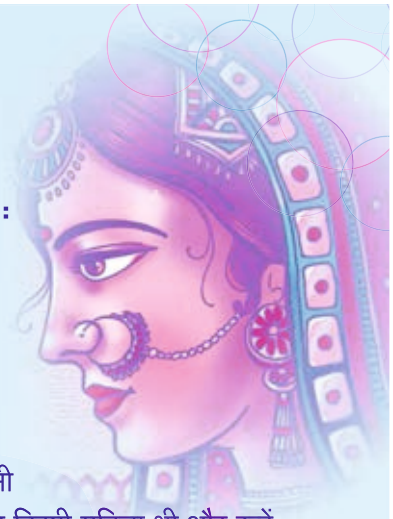

भारतीय इतिहास की श्रेष्ठ नारी :

मन्दोदरी

लंका नरेश रावण की धर्मपत्नी मन्दोदरी को सती नारियों में महत्वपूर्ण स्थान है। राजा मय और रानी हेमवती की सुपुत्री रानी मन्दोदरी बहुत विदुषी महिला थी और उन्हें अनेक शास्त्रों का गहरा अध्ययन था। पद्मपुराण के अनुसार मन्दोदरी रावण की परामर्शदात्री भी थी। अनेक अवसरों पर मन्दोदरी अनेक घटनाओं और उनके परिणामों का पूर्व से अनुमान कर लेती थी। रावण की 18000 रानियाँ थीं परन्तु अत्यन्त सुन्दर मन्दोदरी को उसके विशिष्ट गुणों के कारण उन्हें पटरानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य रविषेण ने मन्दोदरी को सरस्वती, लक्ष्मी और नारियों में सर्वोत्तम कहा है।

एक बार खरदूषण विद्याधर ने रावण की बहन चन्द्रनखा का अपहरण करके ले गया तो रावण ने अत्यंत क्रोध में खरदूषण पर आक्रमण करने को तैयार हो गया तब मन्दोदरी ने रावण को समझाया कि हे नाथ! कन्या तो पराया धन होती है। उसे पिता का घर त्यागना ही होता है। खरदूषण आपकी बहन को ले गया है, वह कई विद्याओं में पारंगत है। यदि वह युद्ध में हार जायेगा तो अपहरण के दोष से कोई भी दूसरा व्यक्ति चन्द्रनखा से विवाह नहीं करेगा और उसे विधवा के समान जीवन व्यतीत करना होगा।

जब रावण ने सीता का हरण किया तब भी मन्दोदरी ने रावण को बहुत समझाया। मन्दोदरी ने कहा - हे नाथ! सीता में ऐसा कौन सा गुण है जो मुझमें नहीं है ? मैं अपनी इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ हूँ। रावण के न मानने पर मंदोदरी ने स्पष्ट रूप से कहा - हे दशानन! लगता है कि राम और लक्ष्मण समीप आ गये हैं। जिस प्रकार अश्वग्रीव और तारक आदि राम के द्वारा मरण को प्राप्त हुये । क्या आप भी इस तरह से मरण को प्राप्त होना चाहते हैं ?

जब रावण नहीं माना तो मन्दोदरी ने शुक आदि मन्त्रियों को बुलाया और रावण को गंभीरता से समझाने के लिये कहा। परन्तु मन्त्रियों ने असमर्थता व्यक्त कर दी क्योंकि वे जानते थे कि रावण किसी नहीं सुनेंगे। फिर भी रानी मन्दोदरी ने अंतिम क्षण तक रावण को समझाने का पूरा प्रयास किया। मन्दोदरी ने अपने पति की भक्ति की परन्तु उसके गलत

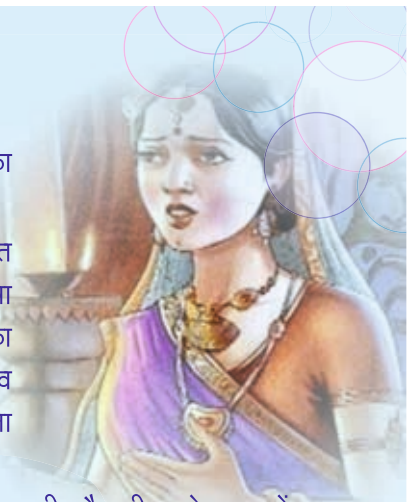

कामों का श्रेष्ठ पत्नी के रूप में उसका विरोध भी किया।

जब रावण की मृत्यु हो गई तो मन्दोदरी बहुत दुःखी हुई। तब राम ने मन्दोदरी आदि रानियों को समझाया मन्दोदरी ने शांत परिणामों से विचार किया और आर्यिका शशिकान्ताजी से धर्म श्रवण किया और अत्यंत वैराग्य भाव से चन्द्रनखा आदि 48000 नारियों के साथ आर्यिका दीक्षा ले ली।

मन्दोदरी ने आर्यिका के व्रत के साथ अपूर्व साधना की और जीवन के अन्त में समाधिमरण पूर्वक स्वर्ग में गमन किया।

भाग्य और पुरुषार्थ

एक सज्जन बहुत गरीब और दुखी थे। उनसे धर्म में मन लगाने की बात करते तो कह देते कि इस समय भाग्य साथ नहीं दे रहा, क्या करूँ ? कुछ दिनों में भाग्य ने पलटा खाया और वे लखपति बन गये।

एक दिन उनसे मिलन हो गया तो उनसे कहने लगे - पण्डितजी! मैंने बड़ी मेहनत से धन कमाया है।

मैंने पूछा - जब आप गरीब थे, तब तो भाग्य को दोष देते थे और आज पुरुषार्थ, मेहनत की बात कर रहे हो। या भाग्य को मानो या पुरुषार्थ को। ऐसा क्यों करते हो कि - मीठा मीठा गप - कड़वा कड़वा थू। कुछ वर्ष बाद वे फिर गरीब हो गये।

मैंने कहा - अब पुरुषार्थ कहाँ गया ? वे कहने लगे यह सब तो भाग्य के आधीन है।

मैंने समझाया - बाहर की सामग्री भाग्य से मिलती है। पुरुषार्थ अपने भावों में हो सकता है, दूसरी वस्तु में पुरुषार्थ नहीं चलता है।

छपते-छपते

जिनदेशना द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला सामूहिक बाल संस्कार शिविर इस वर्ष 28 मई से 5 जून तक आयोजित होगा। यह शिविर मध्यप्रदेश के लगभग 30 नगरों में 50 विद्वानों के द्वारा संचालित किया जायेगा।

विक्रमजी सारा भाई

मद्रास (चेन्नई) में समुद्र किनारे धोती कुर्ता पहने हुये एक सज्जन जिनवाणी पढ़ रहे थे। तभी वहाँ एक लड़का आया और उनसे पूछा कि आप क्या पढ़ रहे हैं? सज्जन ने विनम्रता से उत्तर दिया - जिनवाणी पढ़ रहा हूँ। वह लड़का हंसते हुये बोला - आज साइंस का जमाना है.. फिर भी आप लोग ऐसी पुस्तकें पढ़ते हैं। जमाना चांद पर पहुँच गया और आप लोग जैन धर्म की इन पुरानी बातों पर ही अटके हुये हो..।

सज्जन ने लड़के से पूछा - तुम जैन धर्म के बारे में क्या जानते हो?

लड़का जोश में आकर बोला - अरे! बकवास है ये सब जैन धर्म...। मैं विक्रम सारा भाई रिसर्च संस्थान का छात्र हूँ। **I am a Scientist...**

लड़के की बात सुनकर वह सज्जन मुस्कराने लगे। तभी बड़ी-बड़ी दो गाड़ियाँ वहाँ आईं ... एक गाड़ी में कुछ ब्लैक केट कमांडो निकले और एक गाड़ी से सैनिक। सैनिक ने कार का दरवाजा खोला तो वे सज्जन चुपचाप उस गाड़ी में जाकर बैठ गये। लड़का ये सब देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने दौड़कर पूछा - सर! आप कौन हैं?

वह सज्जन बोले - तुम जिस विक्रम सारा भाई रिसर्च इंस्टीट्यूट में पढ़ते हो ना, मैं वही विक्रम सारा भाई हूँ। लड़का यह सुनकर अंचभित रह गया।

ऐसे थे हमारे जैन समाज के गौरव विक्रम सारा भाई।

जगदीश चन्द्र बसु

पौधों में जीवन की खोज करने वाले डॉक्टर जगदीश चन्द्र बसु ने अपनी एक पुस्तक में लिखाा कि कोलकाता के जिस साइंस कॉलेज में वे पढ़ते थे, उस कॉलेज में एक दिन एक जैन विद्वान का प्रवचन हुआ था। उन विद्वान बताया था कि जैन दर्शन पेड़-पौधों में जीवन मानता है तब उनकी यह बात सुनकर सभी छात्रों ने उनकी इस बात का मजाक उड़ाया था। पर मुझे उनके इस वाक्य ने पौधों में जीवन खोजने के अनुसंधान पर विवश कर दिया। आज सम्पूर्ण विश्व में वैज्ञानिक जगदीश चन्द बसु का नाम पेड़-पौधों में जीवन की खोज के लिये जाना जाता है।

इसी जैन दर्शन को पढ़कर महान राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने हिन्दू जीवन शैली अपना ली और आजीवन मांस खाने का त्याग कर दिया।

- डॉ. अनेकान्त जैन लाल बहादुर संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली

जिनदेशना अहिंसा अभियान का मेगा ड्रॉ सम्पन्न

इस वर्ष जिनदेशना समिति द्वारा महावीर निर्वाण दिवस (दीपावली) के पूर्व पटाखों की हिंसा से बचने की प्रेरणा स्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर जिनदेशना अहिंसा अभियान का संचालन किया गया। इस अभियान में 3200 बच्चों ने ऑनलाईन भरकर और 700 बच्चों ने ऑफलाइन फार्म भरकर पटाखे न फोड़ने की प्रतिज्ञा ली और उस नियम का पालन भी किया। दीपावली के पूर्व उत्साहवर्धन के लिये प्रतिदिन ऑनलाईन प्रश्नमंच का आयोजन भी किया गया। इनमें विजेताओं के नामों का चयन किया गया।

10 दिसम्बर को जिनदेशना अंहिसा अभियान का मेगा ड्रा का आयोजन श्री कमलजी बोहरा, कोटा की अध्यक्षता एवं श्री सुशील जी सेठी, दिल्ली के मुख्य आतिथ्य में किया गया। ऑनलाईन हुये इस कार्यक्रम में लगभग 1500 बच्चे उपस्थित थे। मेगा ड्रा में प्रथम पुरस्कार समृद्धि पारस जैन, विश्वास नगर, दिल्ली को सोने के सिक्के का विजेता घोषित किया गया। 100 द्वितीय विजेताओं को चांदी के सिक्के तथा 500 अन्य बच्चों को गिफ्ट हेम्पर के लिये चयनित किया गया।

इस अभियान में श्रीमति सोनाली प्रतीकजी गांधी इंदौर, श्रीमति रेवा बेन टिम्बरदासजी टिम्बड़िया हस्ते श्री भरतभाई श्री कमलेश टिम्बड़िया कोलकाता/ राजकोट एवं श्री निमित्त शाह कनाडा, श्री नयन शास्त्री हैदराबाद, श्री अभिषेक शास्त्री बण्डा, श्रीमती भविशा आत्मदीप भायाणी, चैन्नई का विशेष अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर कविता और चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसके निर्णायक के रूप में पण्डित विनीत शास्त्री नागपुर और श्रीमति सुहानी विनीत जैन ने सहयोग प्रदान किया गया। यह प्रतियोगिता एस.आर.लाइट्स दिल्ली हस्ते श्री राहुल जैन, चांदनी चौक, दिल्ली के सौजन्य से आयोजित की गई।

यह अभियान श्री विराग शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में, श्री अमित अरिहंत भोपाल के संयोजन में श्री प्रतीक गांधी के मार्गदर्शन में संचालित हुआ। साथ ही पण्डित सुदीप शास्त्री जयपुर और श्री आभास जैन इंदौर का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

आपके प्रश्न
आगम के उत्तर

प्रश्न -1. मंदिरों या धार्मिक जुलूसों में समक्ष बीन बजाने या सपेरे का नृत्य करना उचित है क्या ?

उत्तर - भगवान के सामने भक्ति नृत्य ही होना चाहिये। सपेरा नृत्य तमाशे का नृत्य है। भक्ति या वैराग्यपरक नहीं है। इससे लोगों को राग उत्पन्न होता है।

प्रश्न - 2. सातवें नरक के नीचे इतर निगोद है नित्य निगोद ?

उत्तर - दोनों तरह के निगोद तीनों लोकों में पाये जाते हैं। नरक के नीचे भी दोनों तरह के निगोदिया जीव पाये जाते हैं।

प्रश्न - 3. कुगुरुओं और कुदेवों को पूजने में कितना पाप लगता है ?

उत्तर - असंख्य जीवों की हत्या के बराबर पाप लगता है।

प्रश्न - 4. कच्चा पपीता अभक्ष्य और पका पपीता भक्ष्य क्यों है ?

उत्तर - कच्चा पपीता क्षीर फल है उससे दूध निकलता है। इसलिये अभक्ष्य है और पका पपीता क्षीर फल नहीं होने से भक्ष्य है।

प्रश्न - 5. किसी के घर पर मंदिर की छाया पड़ने अशुभ माना जाता है ऐसा क्यों ?

उत्तर - जैन शास्त्रों में इस तरह का कोई विधान नहीं है। अशुभ और शुभ का सम्बन्ध पाप और पुण्य के उदय से होता है।

प्रश्न - 6. जिनागम में आता है कि राजकुमार नेमि के विवाह में 56 करोड़ बाराती आये थे - ये बात कुछ समझ में नहीं आती ?

उत्तर - जिनागम में 56 कोटि बाराती के आने की बात आई है। इसका अर्थ यह है कि 56 तरह के गोत्र वाले यादववंशी आये थे।

प्रश्न - 7. क्या वर्तमान समय में भरत क्षेत्र से कोई मुनि मोक्ष जा सकते हैं ?

उत्तर - भरत क्षेत्र में मोक्ष जाने की योग्यता वाले जीव वर्तमान में जन्म नहीं लेते।

प्रश्न - 8. कई साधर्मी गंधोदक को पी लेते हैं यह क्रिया उचित है क्या ?

उत्तर - गंधोदक को कभी नहीं पीना चाहिये। हम स्वाहा कहकर जलधारा करते हैं इसलिये वह निर्माल्य हो जाता है। दूसरी बात शरीर के 9 मल द्वार हैं उनमें एक मुंह भी है। मल द्वार में पवित्र जल को डालना पाप ही है।

समाचार

चिदायतन - पवित्र तीर्थ हस्तिनापुर में नव निर्माणाधीन चिदायतन में दिनांक 15 और 16 नवम्बर को वेदी और शिखर शिलान्यास का कार्यक्रम पूर्ण उत्साह से संपन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र.अभिनन्दन कुमार जी के प्रतिष्ठाचार्य में पण्डित संजय शास्त्री कोटा के संचालन में संपन्न हुआ।

सम्मेदशिखर - शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखरजी की तलहटी में स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 23 नवम्बर से 29 नवम्बर तक संपन्न हुआ । इस अवसर पर जिन मंदिर के शिखर में विराजमान होने वाले जिनबिम्बों के प्रतिष्ठा विधि प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के द्वारा श्री विराग शास्त्री और श्री पदमकुमार जी पहाड़िया इंदौर के निर्देशन में संपन्न हुई।

- श्री वीनूभाई शाह, मुम्बई

कोटा- सन्मति संस्कार संस्थान कोटा द्वारा छात्रावास एवं श्री सीमंधर जिनालय, इन्द्रा विहार, कोटा में तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव का आयोजन 13 दिसम्बर से 15 दिसम्बर तक किया गया। इस कार्यक्रम में पण्डित सुबोधजी सिवनी, श्री विरागजी जबलपुर, पण्डित विवेकजी मलाड मुम्बई के प्रवचनों लाभ प्राप्त हुआ। अंतिम दिन पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित जयकुमारजी के संयोजन, श्री वीनूभाई शाह के मार्गदर्शन एवं श्री विराग शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

- श्री ज्ञानचंद जैन (अध्यक्ष)

दमोह - मध्यप्रदेश के सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर के समीप दमोह जिले में श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट, दमोह के द्वारा नवीन जिनमंदिर का शिलान्यास संपन्न हुआ। दिनांक 20 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2023 तक आयोजित इस कार्यक्रम में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। विधि विधान का सम्पूर्ण कार्य विधानाचार्य पण्डित संजयजी कोटा और डॉ. मनोजजी जबलपुर के द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम का निर्देशन विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया गया।

- श्री दिनेश जैन (अध्यक्ष)

उदयपुर - श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर द्वारा 24 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2023 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में बाल कक्षाओं और प्रौढ़ वर्ग के कक्षाओं एवं प्रवचनों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. महावीर प्रसादजी, पण्डित खेमचंदजी, पण्डित ऋषभजी, पण्डित तपिशजी, पण्डित अंकितजी, पण्डित गजेन्द्रजी द्वारा किया गया।

- श्री भावेश कालिका, नरेन्द्र दलावत

मैं नहीं बनूँगी

अरे जैनी! क्या पढ़ाई कर रही हो?

मौसी! एग्जाम आने वाले हैं तो पढ़ाई तो करनी ही पड़ेगी न।

ये बात तो है। अच्छा किस फील्ड में जाने का विचार है ?

अभी कुछ पक्का नहीं किया मौसी! पर बचपन से आसमान में उड़ने का शौक है। मतलब एयर फील्ड में जाने का सोच रही हूँ।

मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा जैनी! साफ - साफ बता न..।

अरे मेरी भोली मौसी! सोच रही हूँ एयरहोस्टेस बन जाऊँ..।

इसमें भला क्या फायदा है?

अरे मौसी! एयर होस्टेस बनकर सुन्दर सी ड्रेस सी पहनकर बस आसमान में उड़ूँ, एक शहर से दूसरे शहर और एक देश से दूसरे देश। आपको याद है पिछली बार जब हम लोग फ्लाईट से कोलकाता गये थे तो फ्लाइट में वो लड़कियाँ थीं न एयरहोस्टेस। कितनी सुन्दर लग रहीं थीं।

अच्छा ! तो मेरी जैनी काम वाली बाई बनना चाहती है..।

काम वाली बाई ... (आश्चर्य से) मौसी ! फ्लाईट में काम वाली बाई कहाँ से आ गई?

काम वाली बाई नहीं तो और क्या है ?

मौसी! काम वाली बाई तो अपने घरों में काम करतीं हैं..

और एयरहोस्टेस फ्लाईट में काम करतीं हैं .. - मौसी ने बात काटते हुये कहा।

मुझे समझ नहीं आ रहा मौसी! आप क्या कहना चाहतीं हैं ?

देख जैनी ! एयरहोस्टेस बनना कोई सम्मान की नौकरी नहीं है।

कैसी बात करती हो मौसी! बहुत सम्मान मिलता है और पैसा भी।

किस बात का सम्मान। दूसरे लोगों को पानी पिलाना, नाश्ता कराना कोई अच्छा काम है क्या? तुम अपने घर में अपना काम तो करतीं नहीं और वहाँ दूसरे लोगों का काम करोगी ? और मुझे तो अच्छी तरह है जब स्वयं ने प्लेन में उल्टी (Vomit) कर दी थी तो उसी ने आकर साफ की थी। यह काम तो अपने घर की काम वाली बाई भी नहीं करती और प्लेन में पहले लोगों को नाश्ता कराओ, फिर उनके झूठे बर्तन, पाउच इकट्ठे करो ये कोई अच्छे काम हैं क्या...?

पर मौसी ..!

तुम पहले मेरी बात सुनो जैनी! फिर तुम्हें जो अच्छा लगे तो करना। हम जैन कुल के हैं,

हमारे घरों में आलू-प्याज आदि कोई जमीकंद भी नहीं आता और तुम वहाँ उनको मांसाहारी भोजन परोसोगी। इतना भयंकर पाप करने से पहले सौ बार सोचना और रही बात घूमने की जब तुम प्लेन में दस-बीस चक्कर लगा लोगी तो खुद ही बोर हो जाओगी।

मौसी! आपने तो मेरा दिमाग ही घुमा दिया।

और सुन बेटी! इससे बड़ी बात... प्लेन में न जाने कौन कौन से लोग आते हैं। कई तो सज्जन आते हैं पर अनेक तो गंदी सोच वाले ही होते हैं। वे पूरे टाइम एयरहोस्टेस को घूरते रहते हैं। मेरे सामने वाली सीट का लड़का बार-बार बेल बजाकर एयरहोस्टेस को बुलाकर परेशान कर रहा था और उसे छूने का प्रयास करता था। ये कोई अच्छी नौकरी नहीं है जैनी। अच्छे कुल की बेटियाँ ऐसा काम नहीं करतीं जिससे अपने शील पर संकट आये।

मौसी! आप सच कह रही हो।

और जैनी! वैसे तो लड़कियों को नौकरी करना ही नहीं चाहिये और करने का शौक ही है तो एयरहोस्टेस तो कभी नहीं बनना। ऐसी नौकरी किस काम की....? जिसमें जिनेन्द्र भगवान के दर्शन का टाइम न मिले, जिनवाणी पढ़ने की फुर्सत भी न मिले। दिन और रात - कभी भी काम करने बुला लेंगे, ये हमारे परिवार के अनुकूल नहीं है। ये मनुष्य भव का जीवन बरबाद करने के लिये नहीं सार्थक करने के लिये मिला है।

मौसी! आज मुझे पता चला कि मौसी को माँ जैसी होने के कारण मौसी कहा जाता है। आपने मुझे गलत रास्ते पर जाने से बचा लिया। आज से निर्णय पक्का हुआ कि मैं एयरहोस्टेस नहीं बनूँगी।

- विराग शास्त्री

समाचार

माँ मैनादेवी सेठी का हुआ सन्मान

सोनागिर - परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर के पूर्व अध्यक्ष और श्रेष्ठी स्व. श्री पूनमचंदजी सेठी की धर्मपत्नी श्रीमति मैना देवी सेठी के जीवन के 90 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में श्री कुन्दकुन्द नगर में **'अध्यात्म के रंग - माँ मैना के संग'** नाम से शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पण्डित श्री विपिन शास्त्री, नागपुर, ब्र. श्री श्रेणिकजी जबलपुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' के निर्देशन पंचपरमेष्ठी विधान सुन्दर आयोजन हुआ।

इस अवसर पर श्रीमति मैनादेवी सेठी के पुत्र श्री अनिलजी सेठी, श्री सुभाषजी सेठी, श्री सुशीलजी सेठी सहित परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे। अपनी माँ के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने करने का यह अनूठा कार्यक्रम था। कार्यक्रम में पण्डित श्री विनीत जी शास्त्री, नागपुर और पण्डित श्री गणतंत्र जी आगरा का विशेष सहयोग रहा। संपूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री के निर्देशन में एवं पं.जीवेश शास्त्री पिड़ावा के सहयोग से सम्पन्न हुये ।

जैन शासन पर गर्व के कुछ प्रसंग

महान जैन वीरांगना –नीरा आर्य

भारत के स्वाधीनता संग्राम में हर जाति, उम्र और वर्ग के लोगों ने अपना यथा संभव योगदान दिया। देश के लिये मर - मिटने वालों में जैन समाज भी पीछे नहीं रहा परन्तु आज देश की आजादी में जैनों के योगदान को याद नहीं किया जाता और न ही आज की पीढ़ी को इस इतिहास का परिचय है। ऐसी एक जैन वीरांगना थी नीरा आर्य। नीरा का जन्म 5 मार्च 1902 को उत्तरप्रदेश के छोटे से गांव खेकड़ा में जैन समाज के प्रतिष्ठित परिवार सेठ छज्जूमल के घर में हुआ। सेठ छज्जूमल का व्यापार पूरे देश में फैला था। विशेषकर इनके व्यापार का मुख्य केन्द्र कोलकाता था। इसलिये इनकी शिक्षा कोलकाता में ही हुई। नीरा के भाई बसंत आजाद हिन्द फौज में थे। नीरा आर्य युवा होने पर आजाद हिन्द फौज में रानी झांसी रेजिमेंट में सिपाही बन गईं। अंग्रेंजों ने इन जासूसी करने का आरोप भी लगाया था। इन्हें नीरा नागिन भी कहा जाता था।

नीरा को अन्य लड़कियों के साथ अंग्रेजों के केम्प में जासूसी करने का काम सौंपा गया था। ये सभी लड़कियाँ पुरुषों की वेशभूषा में अंग्रेजों के केम्प में घूमती रहतीं थीं और उनकी गुप्त सूचनायें नेताजी तक पहुँचातीं थीं। इन्हें स्पष्ट आदेश था कि पकड़े जाने पर खुद को गोली मारकर समाप्त करना है। पर एक बार छोटी सी चूक से एक लड़की पकड़ी गई। तब नीरा और उसकी साथी राजमणि ने निर्णय किया कि हम अपनी उस साथी को छुड़ाकर लायेंगे। दोनों ने हिजड़े का वेश धरकर अंग्रेजों के भोजन में नशे की गोली मिला दीं और अपनी साथी को लेकर भाग निकलीं। लेकिन भागते समय अंग्रेजों को पता लग गया और अंग्रेजो ने गोली चलाई तो पीछे आ रही राजमणि को पैर में गोली छूकर निकल गई। राजमणि के पैर से खून निकलने लगा। पर तीनों किसी तरह एक पेड़ पर चढ़ गईं और नीचे अंग्रेज सैनिक उन्हें ढूंढते रहे। ये तीनों भूखे-प्यासे तीन दिन पेड़ पर चढ़े रहे। बाद में अपने घर वापस आ गये।

नीरा आर्य का विवाह अंग्रेज सरकार के सीआईडी अधिकारी श्रीकांत जयरंजन दास के साथ हुआ। बाद में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जान बचाने के लिये नीरा ने अपने पति श्रीकांत की हत्या कर दी। पति की हत्या करने पर इन पर मुकदमा चलाया गया और इन्हें काले पानी (अंडमान की एक जेल जहाँ पर चारों ओर पानी है और भयंकर यातनायें दी जातीं हैं।) की सजा दी गई। इस सजा में इन्हें भयंकर कष्ट दिये गये। नीरा आर्य ने अपनी आत्मकथा में लिखा - ''जब मुझे कोलकाता से पकड़कर अंडमान ले जाया गया, वहाँ पर और भी अपराधी महिलायें पहले से बन्द थीं। मुझे लोहे की सांकल से बांधा गया था। हमारे रहने के स्थान पर काली कोठरी थी। यहाँ पर सूर्य का प्रकाश भी नहीं आता था। हमें रात 10 बजे तक कम्बल, चटाई नहीं दी गई। जैसे - तैसे मैं जमीन पर लेट गई और नींद भी आ गई। लगभग 12 बजे एक पहरेदार दो कम्बल लेकर आया और बिना बोले मेरे ऊपर कम्बल फेंककर चला गया। बुरा तो लगा पर कम्बल को पाकर संतोष भी हुआ। मुझे बार - बार देश की आजादी की चिन्ता होती थी। सुबह होते ही मुझे खाने के लिये खिचड़ी दी गई। फिर सांकल काटने की लुहार भी आ गया। सांकल काटते समय उसने लापरवाही से मेरे हाथ और पैर की थोड़ी चमड़ी भी काट दी। मुझे बहुत दर्द हो रहा था तो मैंने उससे कहा - अंधा है क्या....? जो देखकर नहीं काट सकता। तो वह गुस्से से बोला - हम तेरे हाथ पैर तो क्या, तेरी छाती भी काट देंगे.... तू क्या कर लेगी? जेलर ने कहा कि यदि तुम बता दोगी कि नेताजी कहाँ हैं तो तुम्हें छोड़ दिया जायेगा तो मैंने कहा - नेताजी तो हवाई दुर्घटना में मारे गये, सब जानते हैं..। जेलर ने चिल्लाते हुये कहा - झूठ बोलती हो तो मैंने भी कहा- हाँ! झूठ बोल रही हूँ। नेताजी जिन्दा हैं और मेरे दिल में हैं। इतना सुनते ही जेलर का गुस्सा बढ़ गया और कहा - तो हम तुम्हारे दिल से भी नेताजी को निकाल देंगे। जेलर का इशारा पाकर लुहार एक बड़ी सी कैंची ले आया जिससे पेड़ों की पत्तियाँ काटीं जातीं थीं और मेरे स्तनों को कैंची से पकड़कर काटने लगा। मुझे नरक जैसी भयंकर वेदना होने लगी। दूसरी ओर जेलर ने पीछे से मेरी गर्दन दबाते हुये कहा - अगर दुबारा बहस की तो जान ले लूँगा। इतना कहकर उसने एक हथियार मेरी नाक पर मार दिया, जिसके कारण नाक से खून निकलने लगा। आज भी जब उस दर्द को याद करती हूँ तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं।'' कुछ समय बाद नीरा को जेल से छोड़ दिया गया। आजादी के बाद भी स्वाभिमानी नीरा ने सरकारी सहायता या पेंशन नहीं ली और फूल बेचकर अपना जीवन यापन किया। 1998 में हैदराबाद में नीरा आर्य की मृत्यु हो गई।

नमन है ऐसे देशभक्त को।

नगाड़े ने झुकाया मुस्लिम शासक का सिर

भारत में सन् 1656 में मुस्लिम शासकों का राज चल रहा था और भारत में शाहजहाँ का शासन था। शाहजहाँ के समय किसी को जैन मंदिर बनवाना तो दुर्लभ था ही उस समय जैन प्रतिमा और जैन मुनि के दर्शन भी दुर्लभ थे। उस समय शाहजहाँ लाल किले में रहकर भारत पर शासन किया करता था। उसके पास विशाल सेना थी।

एक दिन सेना के एक जैन सैनिक रामचन्द्र को कहीं से भगवान पार्श्वनाथ की एक दुर्लभ प्रतिमा प्राप्त हो गई उसने श्रद्धापूर्वक उस प्रतिमा अपने घर में ही विराजमान कर लिया और नियमित रूप से उसकी पूजा भक्ति प्रारंभ कर दी। सेना के अन्य जैन सैनिक भी भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन के लिये आने लगे। धीरे- धीरे आसपास के जैन श्रावकों को भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा होने की जानकारी मिल गई तो वे भी भगवान की आराधना के लिये आने लगे। कुछ ही समय में वह जगह लश्करी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। लश्कर का अर्थ सेना होता है।

शाहजहाँ एक क्रूर राजा था, उसने अनेक मंदिर तोड़े थे। शाहजहाँ को इस मंदिर का पता चल गया था परंतु वह मंदिर अपने सैनिक का है यह जानकर उसने उस पर ध्यान नहीं दिया। सन् 1658 में शाहजहाँ के बेटे औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर लिया और खुद राजा बन गया। औरंगजेब बहुत निर्दयी शासक था, उसने अनेक जैन मंदिर तुड़वा दिये और जैन प्रतिमाओं को तोड़कर मस्जिद की सीढ़ियों पर फिंकवा दिया और अनेक हिन्दुओं को मुसलमान बना दिया। ऐसे क्रूर शासक को लश्करी मंदिर की स्थापना सहन कैसे होती ? लेकिन यह आश्चर्य की बात थी कि औरंगजेब को इस मंदिर का पता ही नहीं चला। लश्करी मंदिर में प्रतिदिन शाम को भक्ति के समय कुछ देर के लिये नगाड़ा बजाया जाता था, ये परम्परा कई माह से चल रही थी।

एक दिन औरंगजेब को नगाड़े का शोर सुनाई दिया तो उसने अपने वजीर (मंत्री) से इस आवाज का कारण पूछा तो वजीर ने बताया कि एक जैन सैनिक के घर में मंदिर

स्थापित है। वहीं भक्ति हो रही है। यह जानकर औरंगजेब भयंकर क्रोध आया और आदेश दिया कि कल से यह शोर सुनाई नहीं देना चाहिये। राजा का आदेश सुनकर किसी भी जैन भाई को नगाड़ा बजाने की हिम्मत नहीं हुई। कोई भी औरंगजेब के गुस्से का शिकार नहीं होना चाहता था। तभी एक आश्चर्य हुआ, वह नगाड़ा अपने आप बजने लगा। नगाड़े की आवाज से लालकिला गूंजने लगा। औरंगजेब को अपने फैसले का अपमान लगा और अपने वजीर (मंत्री) को बुलावा भेजा। तभी सामने से वजीर भागता हुआ आया और बोला - हुजूर! चमत्कार हो गया। मंदिर का नगाड़ा अपने आप बज रहा है। आपको विश्वास न हो तो आप स्वयं चलकर देख लें। राजा को विश्वास नहीं हो रहा था तो उसने स्वयं मंदिर जाकर देखा तो अपनी आंखों से नगाड़ा अपने आप बज रहा था, यह देखकर वह दंग रह गयाा उसने उसी समय शाही फरमान जारी कर दिया कि इस बुतखाने में नौबत बदस्तूर बजने दिया जाया। फैजाने इलाही पर बंदिश नहीं लगाई जा सकती। अर्थात् इस मंदिर में नगाड़ा बजाना पहले की तरह जारी रखा जाये, ईश्वरीय आदेश को नहीं रोका जा सकता।

इसके बाद इस जिनालय की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई। यह दिल्ली का पहला जैन मंदिर था। बाद में इस मंदिर के सामने उर्दू बाजार लगाये जाने के कारण इसे उर्दू मंदिर भी कहा जाता रहा। सन् 1878 में इस मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ और इसमें लाल पत्थरों का प्रयोग किया गया तब से आज तक इसे लाल मंदिर के नाम से जाना जाता है। 141 वर्ष से लालमंदिर के नाम से विख्यात मंदिर दिल्ली के चांदनी चौक में लालकिले के सामने स्थित है।

आपका संबल हमारा प्रयास

हमारी निम्न योजनाओं में सहयोग प्रदान कर जिनशासन प्रभावना में सहयोगी बनें ।

शिरोमणि परम संरक्षक	**1,00,000/- रु.**
परम संरक्षक	**51,000/- रु.**
संरक्षक	**31,000/- रु.**
परम सहायक	**21,000/- रु.**
सहायक	**11,000/- रु.**
सहायक सदस्य	**5,000/- रु.**
सदस्य	**1,000/- रु.**

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि ''चहकती चेतना'' के नाम से **''चहकती चेतना''** के पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में IFSC : PUNB0193700 जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं ।

PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं ।

बोलते चित्र

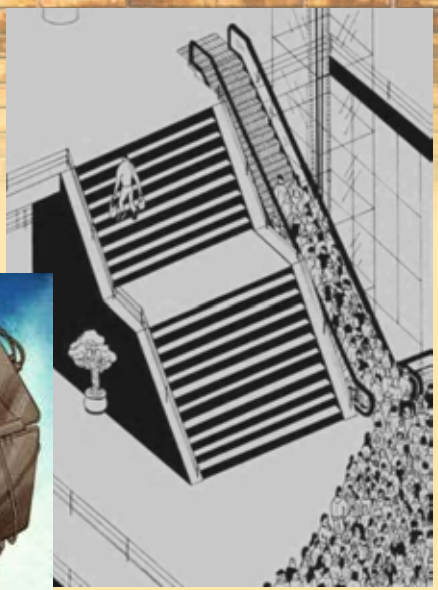

जिन देशना

जन्मदिन उपहार योजना

एक नये एहसास के लिये प्रस्तुति

चहकती चेतना पत्रिका, जबलपुर

मार्गदर्शक : **विराग शास्त्री**, जबलपुर

9300642434

अपने बच्चों उनके
जन्मदिवस पर उपहार दीजिये
जन्म दिवस योजना के सदस्य बनिये
आप पायेंगे एक सुंदर मोमेन्टो
जिस पर बच्चे के नाम पर
एक कविता और फोटो, दो गिफ्ट,
जन्म दिवस ग्रीटिंग,
जन्म दिवस के पूर्व घर बैठे पायेंगे ये सब

शीघ्र सदस्य बनें

संपर्क :
9752756445
(Whatsapp No.)

चहकती चेतना का केलेण्डर निःशुल्क प्राप्त करें

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी चहकती चेतना का केलेण्डर हो रहा है। आपको ज्ञात हो कि यह केलेण्डर अप्रेल 2024 से मार्च 2025 तक की तिथियों वाला सचित्र रंगीन होगा। इस केलेण्डर में एक विशेष थीम के साथ रोचक और ज्ञानवर्द्धक जानकारी प्रकाशित की जाती है। साथ ही इसमें तीर्थंकरों के कल्याणक, विशेष धार्मिक पर्व, देश में होने वाले विशेष आयोजनों की जानकारी भी दी जाती है।

इस केलेण्डर में विज्ञापन के रूप में सहयोग देने के इच्छुक साधर्मी संपादक श्री विराग शास्त्री से 9300642434 पर संपर्क कर सकते हैं। निःशुल्क केलेण्डर प्राप्त करने के लिये आप 9752756733 पर व्हाट्सएप पर अपना पूरा पता भेज सकते हैं।